kissekahani.com

गूंगा आदमी

विपुल एक प्रतिष्ठित इन्जीनियर का बेटा था। बचपन से ही उसने अंग्रेजी माध्यम स्कूल में पढ़ा। घर में भी वह अक्सर सबसे अंग्रेजी में ही बातचीत करता। हिन्दी में बहुत कम बोलता।

आसपास के लड़के जो हिन्दी माध्यम स्कूल में पढ़ा करते थे, उनके साथ वह बिल्कुल लगाव नहीं रखता और उन्हें हीन दृष्टि से देखता भी। अंग्रेजी बोलने में उसे गौरव की अनुभूति होती। सुधाकर उसके मुहल्ले का ही लड़का था, जो हिन्दी माध्यम स्कूल में पढ़ा करता

विपुल और सुधाकर एक ही कक्षा के विद्यार्थी थे।

अन्तर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में एक बार दोनों को सम्मिलित होने का अवसर मिला। यह प्रतियोगिता जापान में आयोजित की गई थी। दोनों सरकारी खर्च से जापान गए। समय पर प्रतियोगिता भी हुई। तुरंत उसका नतीजा भी निकला। विपुल को उस प्रतियोगिता में पहला और सुधाकर को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। अब तो सभी देशों से आए प्रतियोगियों ने उन दोनों से दोस्ती का हाथ बढ़ाया। विपुल सबसे अंग्रेजी में ही बातचीत करता। मगर सुधाकर जो उसे भारतीय समझ कर हिन्दी में बातें शुरू करता, उसके साथ वह हिन्दी में ही और जो अंग्रेजी में बातें करता, उससे अंग्रेजी में ही बातचीत करता।

एक जापानी ने विपुल को भारतीय समझ कर हिन्दी में उससे बातचीत करना चाहा हिन्दी भाषा में उसने उसके चित्रकला की खूब सराहना की। कई सवाल भी उससे हिन्दी में पूछे। मगर विपुल ने सबका जवाब अंग्रेजी भाषा में दिया।

उस जापानी लड़के को विपुल से काफी निराशा हुई। उसने वहाँ मौजूद कई देशों के लड़के के समक्ष साफ शब्दों में कहा, 'यद्यपि विपुल ने अन्तर्राष्ट्रीय चित्रकला प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त किया है किन्तु खेद है कि वह गूंगा है!'

सुधाकर भी उस जगह खड़ा था। उसे बहुत बुरा लगा। उसने उस जापानी लड़के से पूछा, 'ऐसा क्यों कह रहे हो?'

kissekahani.com

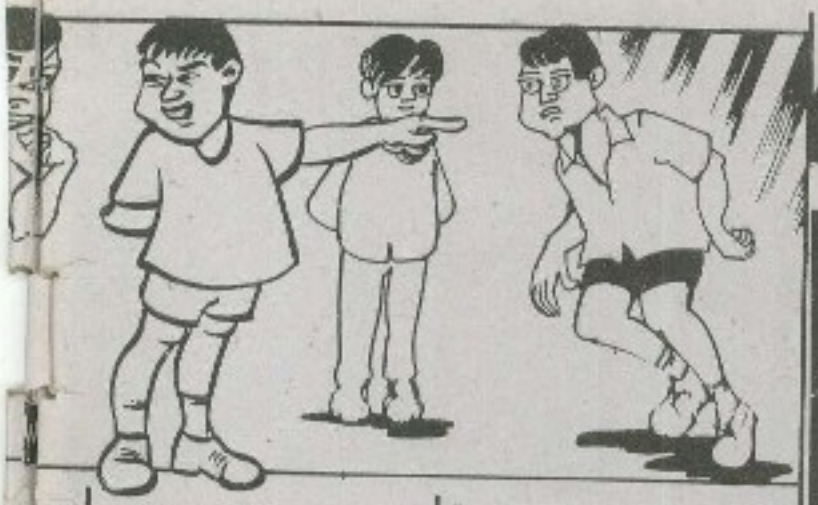

विपुल को भी बात कुछ समझ में नहीं आई। उसे सभी देश के लड़के के सामने गूंगा कहकर अपमानित किया गया था। अतएव उस जापानी लड़के की बात उसे भी एकदम अच्छी नहीं लगी थी।

जापानी लड़का बोला, 'विपुल भारतीय है। मैंने उससे उसके देश की भाषा में बातें की। किन्तु उसने मेरी हर बात का जवाब अंग्रेजी में दिया, जो भारत की अपनी भाषा नहीं है, विदेशी भाषा है जिसके पास अपनी भाषा नहीं है, उसे हम लोग गूंगा ही समझते हैं!'

अब विपुल को अपनी भूल समझ में आई। उसने फिर उस जापानी लड़के से हिन्दी में ही ढेर सारी बातें की। यही नहीं, आने के समय रास्ते में वह सुधाकर से अंग्रेजी में ही बातें करता रहा था, मगर वापसी की बेला में उसने हिन्दी में ही बातें की।

यही नहीं घर आकर उसने अपने आपको बिल्कुल बदल डाला। अब वह सबसे हिन्दी में ही अधिकतर बातचीत करता। उसे अपने गूंगापन का ऐसा एहसास हुआ कि अंग्रेजी का अनावश्यक मोह और अहंकार उसने तुरंत त्याग दिया।

राधेलाल 'नवचक्र'

साप्ताहिक लोटपोट

अंक 1123 3-10-93

सम्पादक एवं प्रकाशक:
: ए.पी. बजाज
सह-सम्पादक :
: अमन
: श्वेता

○ फा: लोटपोट साप्ताहिक
ए-5, मायापुरी,
नई दिल्ली-110064
दूरभाष: 5433120-591439
5457636-536103
TLX No-031-76125 MPLP IN
FAX NO. 91 11 5418596
मुद्रक : अरोड़बंस प्रेस
मायापुरी,
नई दिल्ली-110064

'लोटपोट' शीर्षक आर.एन.आई भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है। 'लोटपोट' में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। इसलिए बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए।

प्रकाशन कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, जीवित मृत स्थानों घटनाओं या संस्थाओं से उनकी किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है। चित्रांकन, निजधार की कल्पना पर ही आधारित है, सम्पादक एवं प्रकाशक किसी प्रकार के उत्तरदाई नहीं होंगे।

प्रकाशित लेखों के लेखकों की राय से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं, किन्तु कोई लेख पढ़ कर अगर किसी को आपत्ति हो तो वह अपनी प्रतिक्रिया हमें लिखकर भेज दें। मिलने पर अपने योग्य होने पर सहर्ष छाप दी जाएगी।

इस पत्रिका के संबंध में किसी भी प्रकार के मतभेद एवं विवाद आदि केवल दिल्ली कोर्ट से ही निपटाए जा सकते हैं।

पल भर की दोस्ती

दिन में काफी गर्मी के बाद शाम को आकाश काले बादलों से घिर आया। ऐसा आभास हो रहा था, कि कुछ ही समय में बारिश आने वाली है, क्योंकि ठंडी हवा बारिश के आगमन की सूचना दे रही थी।

हवा में झौंके से सागवान का एक पत्ता टूट कर जमीन पर आ गिरा। उसके बाद पत्ते को जरा भी सुध नहीं रही, कि हवा उसे कहाँ से कहाँ उड़ा कर ले गई। उसे तो तब होश आया, जब वह अपने आपको किसी खेत में एक मिट्टी के ढेले की ओट में पाया। हवा उसके ऊपर से गुजरती चली जा रही थी। जब पत्ते को होश आया तो वह सोचने लगा कि वह कहाँ था और कहाँ आ गया। कुछ ही देर के बाद उस मिट्टी के ढेले की आवाज आई। जिसके ओट में पत्ता छिपा हुआ था। ढेले ने कहा 'दोस्त, बहुत अच्छे समय में तुम मेरी मदद के लिए आए हो।' पत्ता यह सुनकर हैरान रह गया, उसने सोचा कि ढेले ने तो खुद उसकी मदद की है, नही तो क्या मालूम हवा उसे किस सड़े हुए पानी के तालाब में ले जाती। पत्ते के ऐहसान का बदला चुकाने के लिए ढेले से पूछा 'आखिर मैं तुम्हारे किस काम आ सकता हूँ।' ढेला बहुत सहमे हुए स्वर में बोला 'आकाशमें बादल तो तुम देख ही रहे हो, अगर बारिश आ गई तो मेरा नामोनिशान मिट जाएगा।' 'मगर मैं कर ही क्या सकता हूँ?' पत्ते ने फिर पूछा ढेले ने उत्तर दिया 'अगर तुम मुझे ढक लो तो मैं बारिश से बच जाऊँगा और मैं तुम्हारा ऐहसान जिन्दगी भर नही भूलुँगा।' लेकिन अगर आँधी आ गई तो' पत्ते ने पूछ। 'तो मैं तुम्हें अपने ओट में छिपा लूंगा। इस प्रकार हम दोनों बच जाएंगे' ढेले ने सुझाव दिया।

ढेले की सुझाव से पत्ता बहुत खुश था, क्योंकि वह

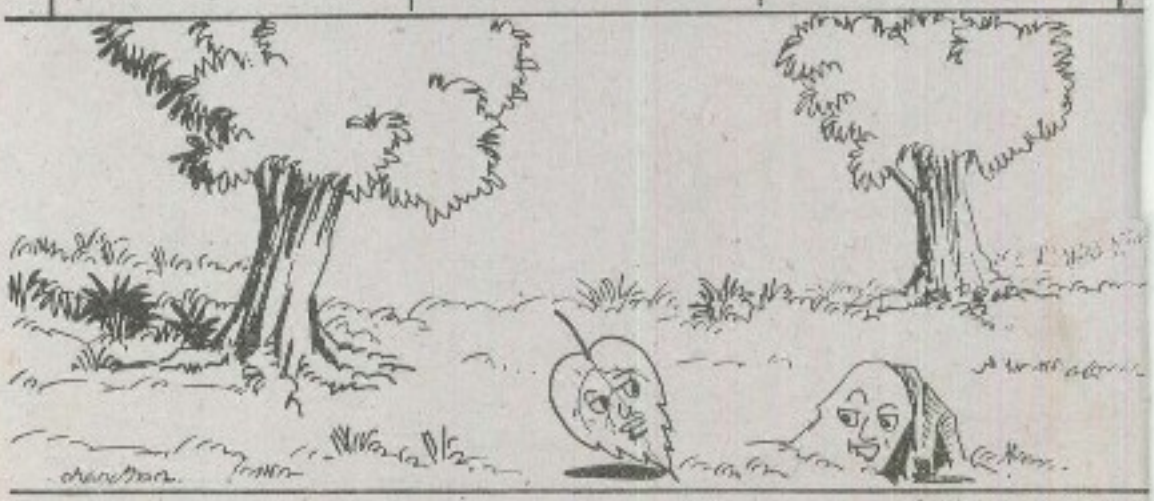

सोच रहा था, कि किसी भी तरह ढेले द्वारा किए गये एहसान का बदला चुका दे। अपनी बुद्धिमानी पर ढेला भी फुला नही समा रहा था। ऐसे ही इधर उधर की बातें करते करते दोनों एक दूसरे के दोस्त बन गये।

विपत्ति में साथ देने वाले मित्र, और मित्रों से कहीं ज्यादा प्रिय होते है।

हवा की रफ्तार धीरे धीरे तेज होने लगी। कुछ ही देर में हवा ने आँधी का रूप ले लिया। आँधी से बचाने के लिए ढेले ने पत्ते को अपनी ओट में छुपा लिया। लेकिन कुदरत की लीला कौन जानता था, थोड़ी ही देर में आँधी के साथ साथ बारिश भी आ गई। अब तो बहुत विकट स्थिति पैदा हो गई। अगर ढेला पत्ते को बचाता तो खुद पानी में गल जाता और अगर पत्ता ढेले को ढकता तो आँधी में खुद उड़ जाता भी पत्ते से रहा नही गया। अपने दोस्त को भीगता देख पत्ते ने कहा 'मैं तुझे ढक लेता हूँ, मुझे ऊपर आने दो' ढेले के लाख मना करने के बावजूद पत्ता अपने दोस्त को बचाने के लिए ऊपर आ गया। अचानक एक झटका लगा और पत्ता आँधी के साथ उड़ता हुआ एक नदी में जा गिरा। इधर ढेले को बारिश ने भिगाकर गला दिया। ढेला गल कर काफी छोटा हो गया और पानी के साथ बहता हुआ उसी नदी में आ गिरा जहाँ उसके दोस्त को आँधी उड़ा कर ले आई थी। एक बार फिर दोनों मिल गये। लेकिन इस बार की मिलन में दोनों का दम घुट रहा था।

पानी के साथ बहते पत्ते को दो दिन हो गये। तीसरे दिन पत्ता सड़ गया। पत्ते के साथ साथ चलते चलते ढेले का कण कण अलग हो गया। देखते ही देखते दोनो दोस्तों का अन्त हो गया लेकिन विपत्ति में पलभर के लिए की गई दोस्ती को उन दोनों ने अपने अन्त की परवाह न करते हुए बखूबी निभाया।

-मधु वर्मा

क्रोध ज्ञानी पुरूष के हृदय में झांक सकता है परन्तु वह केवल मूर्खों के हृदय में ही निवास करता है -कहावत

नकल का परिणाम

कक्षा में प्रवेश करते ही मास्टर जी ने देखा सारे बच्चे शोर मचा रहे थे । केवल एक बच्चा ही चुपचाप बैठा था । जिसका नाम बंटी था । बंटी को देखकर मास्टर जी बड़े प्रभावित हुए ।

नए मास्टर जी को कक्षा में आया देख सभी बच्चे चुपचाप खड़े हो गए । बैठने का संकेत करके मास्टर जी ने किताब निकालने को कहा

अचानक मास्टर जी की निगाह पुनः बंटी पर गई । उन्होंने बंटी से कहा आज का पाठ तुम पढो । बंटी मौन खड़ा रहा । मास्टर जी ने पुनः कहा फिर भी बंटी चुपचाप खड़ा रहा ।

मास्टर जी ने परेशान होकर इधर उधर देखा तो कक्षा के सारे बच्चे जोर जोर से हँसने लगे । मास्टर जी को कुछ समझ में नहीं आया । उन्होंने बंटी के पास बैठे मिन्टू को सबकुछ बताने के लिए कहा ।

मिन्टू बंटी से चिढ़ता था । वह हर समय बंटी की नकल उतारता रहता था क्योंकि बंटी तोतला था । यही वजह थी कि बंटी मास्टर जी के दो बार कहने पर भी चुपचाप खड़ा रहा । आज मिन्टू को फिर से बंटी की नकल उतार कर चिढाने का अच्छा मौका मिल गया । वह बोला-

'मास्तल जी, मास्तल जी, बंती तोतला बोलता है ।'

मास्टर जी ने बंटी को अपने पास बुलाकर प्यार से उसके सिर पर हाथ रखा तो बंटी फूट फूटकर रोने लगा और बोला-

'मास्तल जी, साले बत्ते लोद मुदे ऐते ही तिलाते हैं

मास्टर जी ने गुस्से में मिन्टू से पूछा क्या यह सच है ? मिन्टू डर के मारे चुपचाप खड़ा रहा । कक्षा के सारे बच्चे एक साथ बोलने लगे मास्टर जी मिन्टू हर समय बंटी को चिढ़ाने के लिए

kissekahani.com

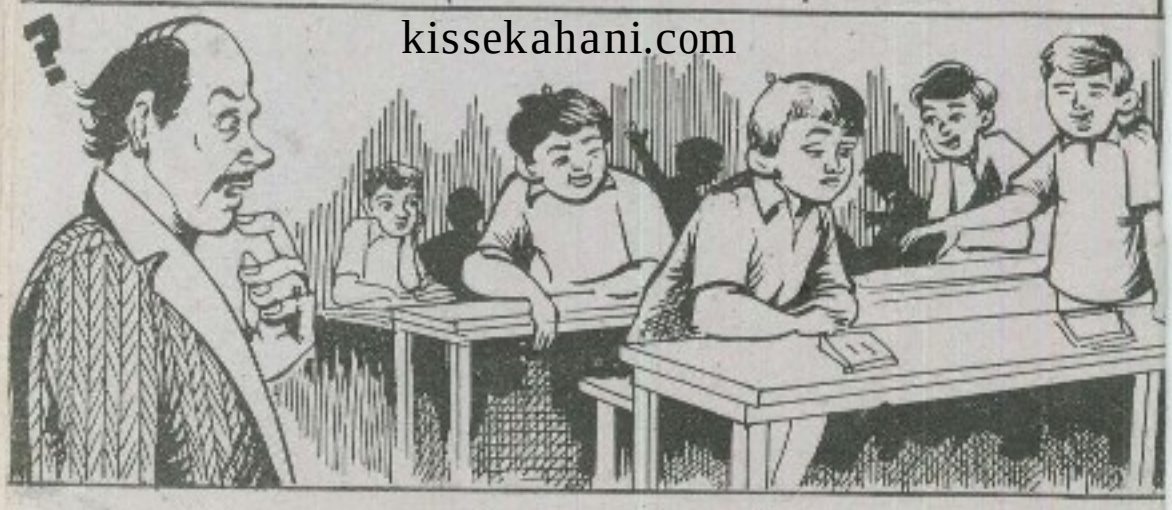

उसकी नकल उतारता रहता है । उसे बहुत तंग भी करता है । इसको तोतला बोलने का बहुत अभ्यास हो गया है

अब यह साफ बोलना पसन्द नहीं करता । शायद साफ बोल ही नही सकता ।

यह सुनकर मिन्टू जोर से चिल्लाया क्यों नहीं बोल सकता । सुनो मास्तल जी...

मिन्टू को लगा जैसे वो सचमुच में ही तोतला हो गया है । यह सोचकर वह रोने लगा ।

मास्टर जी ने मिन्टू को चुप कराते हुए कहा नकल उतारना बुरी आदत है । तुमने इसका काफी अभ्यास कर लिया है । शायद इसलिए ही तुम्हारी जबान तोतली हो गई है ।

आगे से बंटी को कभी नही चिढ़ाना और शुद्ध बोलने का आज से ही प्रयास करना ।

मिन्टू मारे शर्म के सिर झुकाए खड़ा रहा । फिर कुछ सोचकर रूआँसे स्वर में बोला मुझे माफ कर दीजिए सर, अब मैं कभी किसी की नकल नही उतारूँगा ।

-सुमन गुप्ता

आज ही अपने पत्र विक्रेता से खरीदें

पिटारा कॉमिक्स, ए. 5. मायापुरी-नई दिल्ली-110064 दूरभाष- 5433120, 591439

जिम्मेदारी का प्रश्न

-रमाकान्त 'कान्त'

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी दौलतपुर जिला रायबरेली के रहने वाले थे । उनके पुश्तैनी मकान की दीवार बहुत ज्यादा कमजोर हो चुकी थी । ऐसी संभावना थी कि वह कभी भी गिर जाये ।

द्विवेदी जी ने जिलाधिकारी को पत्र लिख कर इस संबंध में आवश्यक सूचना भिजवाई । जिलाधिकारी के आदेशानुसार एक अधिकारी मौका मुआयना करने के लिए पहुँचे । स्थिति का जायजा लेकर उक्त अधिकारी ने निष्कर्ष निकाला कि फ़िलहाल दीवार गिरने की कोई संभावना नहीं है । उसने द्विवेदी जी को कहा 'द्विवेदीजी, आपकी शंका हमारी समझ में नहीं आई । यदि दीवार को गिरना होगा तो गिर जायेगी । इसके इतने गंभीर परिणाम क्या हो सकते हैं इस पर द्विवेदी जी ने मुस्कराते हुए कहा 'ठीक है । बस इतनी सी बात आप एक कागज पर लिख कर मुझे दे दीजिए कि इस दीवार के गिरने से यदि किसी की जान चली गई तो उसकी जिम्मेदारी आपकी होगी ।'

उनकी बात सुन कर अधिकारी निरूत्तर हो गया क्योंकि दीवार इतनी मजबूत नहीं थी कि वह ऐसा लिखकर दे देता । उसने तुरन्त उस दीवार को गिरा देने का आदेश दे दिया

लोटपोट पहेली न. 15 के विजेता

प्रश्न : भारत में सबसे लम्बी सुरंग कहाँ है ?
उत्तर : जवाहर सुरंग, जम्मू कश्मीर में

प्रश्न : भारत में सबसे लम्बा रेलवे मार्ग कहाँ से कहाँ तक है
उत्तर : कलकत्ता से दिल्ली तक

प्रश्न : विश्व का सबसे बड़ा प्राइवेट बैंक कहाँ पर है ?
उत्तर : अमेरिका में

1. रिपु दमन सिंह भिंड
2. सोनिया गुप्ता लुधियाना
3. अनिल कुमार, नागदा मण्डी
4. अमित जैन, नागपुर
5. दिनेश कुमार, जयपुर
6. गरीमा गुप्ता, हिसार
7. शेख अहमद, थाने

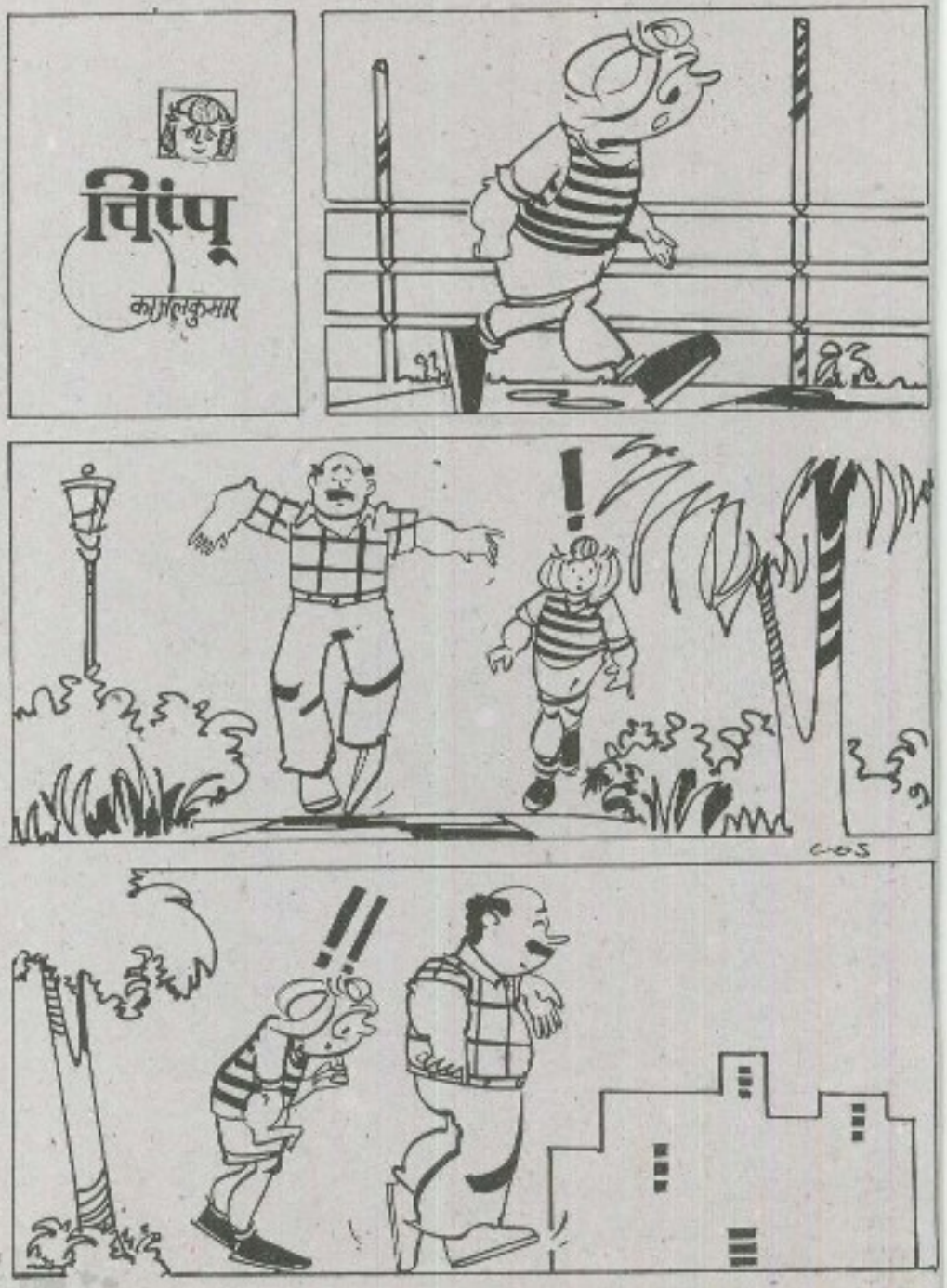
चिंपू
कमलकुमार

kissekahani.com

घंमड का नतीजा

बहुत पुरानी बात है। अरब देश में बहुत जोर की गर्मी पड़ी। पेड़ पौधे सूख गए कुंए तालाबों में भी पानी न रहा। लोग घर छोड़कर पानी की तालाश में निकल पड़े। गांव बस्ती उजडने लगे। जंगल के पशु पक्षी प्यासे मरने लगे। दूर दूर तक पानी का अकाल पड़ गया।

पक्षियों ने मिलकर सलाह की कि क्या किया जाए। पानी की खोज की गई मगर कोई नतीजा न निकला पशु पक्षी उदास बैठे थे। तभी आकाश से एक अजनबी पक्षी उतरा वह दूर देश से आ रहा था। रास्ते में उसे प्यास लगी, मगर पानी नही मिला। नीचे देखा, तो पशु पक्षियों का झुंड था वह भी नीचे उतर आया उसने सोचा 'हो सकता है, यहाँ पानी मिल जाए।

अजनबी पक्षी ने पानी के बारे में पूछा सभी ने कहा 'हम खुद पानी की तलाश में हैं। तुमने कहीं पानी देखा हो तो हमें बताओ।

'हाँ पानी तो है, मगर है दूर मैंने रास्ते में एक तालाब देखा था उस समय मुझे प्यास नहीं थी, इसलिए वहां पानी पीकर नहीं आया। मुझे क्या पता था कि आगे पानी नही मिलेगा। तालाब काफी दूर है।' समुन्द्र के उस पार साहस करो तो पानी मिल सकता हैं।' उस पक्षी ने बताया।

पानी के बारे में जानकारी पाकर पशु पक्षियों को खुशी तो हुई लेकिन सवाल यह था कि वहां तक जाया कैसे जाए पानी कैसे लाया जाए ? कुछ पक्षियों ने ऊंट से कहा 'आप अपने पेट में बहुत सारा पानी भरकर ला सकते हैं। इसलिए आप पानी ले आइए।

ऊंट ने कहा 'मैं पेट में पानी भरकर ला सकता हूँ। लेकिन समुद्र को पार कैसे करूंगा ?'

ऊंट की बात ठीक थी। यही बात जिराफ के साथ भी थी तभी शुतुरमुर्ग उठ खड़ा हुआ वह लम्बा चौड़ा हट्टा कट्टा पक्षी था। 'मैं जाता हूँ पानी लेने मुझे एक मशक दे दो, जिसमें मैं पानी भरकर ले आऊँ' वह बोला।

पक्षियों ने शुतुरमुर्ग को मशक दे दी सचमुच ही वह कुछ देर में मशक भर कर ले आया सभी पक्षियों को उससे पानी पिलाने लगा पीने

वाले ज्यादा थे। एक मशक पानी से कुछ ही पशु पक्षियों की प्यास बुझी वह दोबारा उड़ा और फिर पानी ले आया इस तरह तीन चार बार पानी लाकर उसने सभी की प्यास बुझा दी।

दूसरे दिन पानी की जरूरत फिर पड़ी तो शुतुरमुर्ग ने कहा 'तुम सभी मिलकर एक गड्ढा खोद दो उसे मैं पानी से भर दूंगा।

रोज रोज उसी में से पानी पीते रहना।

सबने मिलकर गड्ढा खोदा शुतुरमुर्ग ने उसे पानी से भर दिया उसके इस अच्छे काम से पशु पक्षियों ने उसे जंगल का राजा बना दिया। राजा बनते ही उसे घमंड हो गया। उसने एक आदेश जारी किया हरेक पशु पक्षी पहले मुझे झुककर तीन बार सलाम करे तब उसे गड्ढे से पानी पीने दिया जाएगा। यह आदेश बुरा तो लगा, लेकिन कोई कर भी क्या सकता था।

कुछ दिनों में शुतुरमुर्ग का दिमाग और चढ़ गया। अब उसने दूसरा आदेश निकाला 'हरेक पशु पक्षी को मेरे सामने तीन बार मेरी तारीफ में गीत भी गाना पड़ेगा।

पक्षी तो गीत गा सकते थे लेकिन पशु क्या करते ? वे गीत कैसे गाते ? उनका तो गला ही गीत गाने लायक नहीं था। बेचारा ऊंट बहुत ही दुखी था। जिराफ भी नहीं गा सकता था। वे गीत नहीं गा सके। शुतुरमुर्ग ने उन्हें पानी नहीं पीने दिया।

एक दिन एक बूढ़ा यात्री वहां से गुजरा पानी देखकर वह उसे पीने के लिए आगे बढ़ा शुतुरमुर्ग ने गरजकर कहा। 'ए बूढ़े, क्या कर रहा है ?'

'पानी पीने जा रहा हूँ क्यों, क्या बात है ?' उस बूढ़े ने पूछा, 'तुझे मालूम नहीं। मैं यहां का राजा हूँ मेरी आज्ञा लिए बिना कोई पानी पी नहीं सकता। अमर तुझे पानी पीना है, तो पहले मुझे झुक कर तीन बार सलाम कर मेरी तारीफ में गीत गा। तभी तुझे पानी पीने की आज्ञा दे सकता हूँ।' शुतुरमुर्ग अकड़कर बोला।

'मेरा गला प्यास से सूख रहा है मैं गीत नहीं गा सकता लम्बे सफर के कारण मैं बहुत थक गया हूँ। मुझमें इतनी ताकत नहीं कि मैं तुम्हें तीन बार सलाम कर सकूं। 'बूढ़े न कहा।

'तो तुम पानी भी नहीं पी सकते। जाओ यहां से 'शुतुरमुर्ग बोला।

बूढ़े को बुरा तो लगा, किन्तु उसके पास कोई दूसरा तरीका नहीं था। हारकर उसने कहा 'अच्छा, तुम अपनी तारीफ में गीत सुनना चाहते हो, तो सुनो' यह कहकर उसने जो गीत

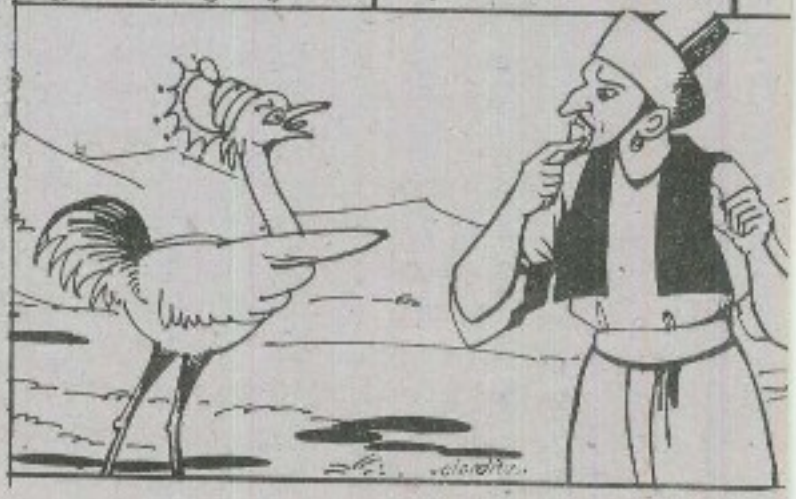

सुनाया, उसका अर्थ था शुतुरमुर्ग रेगिस्तान का सबसे घमंडी और कुरूप पक्षी है। उसकी गर्दन ऊंट जैसी और टांगे बांस जैसी हैं उसके पंख दिखावटी है। उनसे वह उड़ नहीं सकता।

बूढे ने जैसे ही गीत गाया शुतुरमुर्ग देखते देखते बेडौल और कुरूप हो गया। उसकी टांगे बांस जैसी और गर्दन ऊंट जैसी हो गई। उसके पंख बेकार हो गए। उसने उड़ने की कोशिश की लेकिन वह उड़ नहीं सका। अपना यह हाल देखकर वह घबराया। बूढ़े ने कहा 'देख ले अपने घमंड का नतीजा शुतुरमुर्ग।'

तभी जोर से वर्षा होने लगी सभी गड्ढे और तालाब भर गए। बूढे ने फिर कहा देख घमंडी शुतुरमुर्ग, अब इन गड्ढों और तालाबों में पानी हमेशा पानी भरा रहेगा। सभी इन्हीं से पानी पीएंगे तेरे पास कोई नहीं आएगा ?' इतना कहकर बूढा चला गया शुतुरमुर्ग को अपनी गलती पर पछतावा हुआ वह बूढ़े से माफी मांगने के लिए उसके पीछे भागा तब से लेकर आज तक वह रेगिस्तान में इसी तरह तेज तेज भागता फिर रहा है उस बूढे की तलाश में।'

-सौ. सुनंदा ज्ञानदेव चौधरी

लेखक होने का गौरव

एक छोटा सा गांव था । वहां एक युवक रहता था । उसे पढ़ने का बहुत शौक था । एक दिन जब वह एक कहानी की पुस्तक पढ़ रहा था तो उसे लगा कि ऐसी कहानी तो वह भी लिख सकता है । लेकिन सर्वप्रथम तो उसे भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए । वह सोच कर वह गांव की पाठशाला में भर्ती हो गया । भाषा का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद उसने एक कहानी लिखी और छपने के लिए एक अखबार में भेज दी । शीघ्र ही सम्पादक का जवाब अया कि आपके अक्षर सुंदर नही है, कृपया सुंदर अक्षरों में कहानी लिखकर भेजिए । इस पर उस युवक ने अपने अक्षर सुधारे और सुंदर अक्षरों में कहानी लिखकर अखबार में छपने के लिए भेज दी । संपादक ने अब की बार लिखा कि आपकी कहानी का कथानक तो ठीक है लेकिन आपकी भाषा में प्रवाह नही है । युवक ने सोचा कि प्रवाहमान भाषा के लिए तो उसे शहर जाना होगा और किसी विद्यालय में भर्ती होना पड़ेगा । इस काम के लिए तो पैसा चाहिए।

उस युवक में उत्साह कम न था । उसने काम करके पैसे बचाना शुरू किया और जब पैसे जमा हो गए तो शहर जाकर विद्यालय में भर्ती हो गया।

दो तीन वर्षों में ही उसकी भाषा सुधर गई । उसमें प्रवाह आ गया । अब उसने फिर से कहानियां लिखना शुरू कर दिया । उसकी कहानियां छपने भी लगी और उसे यश भी मिलने लगा । वह युवक और कोई नही बल्कि कजाकिस्तान का रहने वाला आनतोलीव ही था जिसे बाद में एक बड़ा लेखक होने का गौरव प्राप्त हुआ।

-नारायण लाल

kissekahani.com

बाल समाचार

भगवान बुद्ध की कई प्रतिमाएं मिली

मछली पत्तनम के निकट खुदाई के दौरान भगवान बुद्ध, पाद तथा बौद्ध धर्म से संबंधित पुरातात्विक महत्त्व की कई प्रतिमाएं मिली है । भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के एक प्रवक्ता को बताया कि 21 कि.मी. दूर घंटशाला के दक्षिण पूर्व स्थित पटी दिब्बा में खुदाई के दौरान मिली 62 प्रतिमाओं को एक मकान में रखा गया है ।

इन प्रतिमाओं के लिए शीघ्र ही एक संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा ।

रोगियों के लिए पॉकेट कम्प्यूटर

मधुमेह से पीड़ित रोगी अब इंसूलिन की दैनिक मात्रा की पहचान और रोग की डायरी को एक पॉकेट कम्प्यूटर द्वारा जान सकेंगे । ग्लूकोस 2000 नामक एक कम्प्यूटर रोगी की शरीर में जाँच करता हुआ उन्हें आवश्यक दवा की मात्रा के बारे में सूचित करेगा । ब्लड शुगर लेबल और इंसुलिन की मात्रा के अलावा रोगी की दशा का ब्यौरा भी यह रखेगा, इससे डाक्टर को रोगी के इलाज में सहायता मिलेगी ।

अपनी भूख को मार कर जो भिखारी को भीख (रोटी) दे वही सच्चा दाता है ।
-चतुरसेन शास्त्री

यह भी दोस्त है

जर्मन शेफर्ड नस्ल का यह कुत्ता अपनी पीठ पर सवार इस 'कुआला बीअर' किस्म के नन्हें भालू को घुमा घुमा कर थक गया है लेकिन वास्तव में ब्रिस्बेन आस्ट्रेलिया में रहने वाले इस कुत्ते को अपने नन्हें दोस्त को घुमाना बहुत अच्छा लगता है ।

दो दोस्त

स्क्रीन फेल

● कथानक एवम् चित्रांकन :- हरविन्द्र मांकड़

..यह है गुरुत्वाकर्षण
धड़ाम!
अयं! ये खजूर से टपकने वाला आदमी, आसमान से कैसे टपक पड़ा.

क्यों भई पतीले, तू डाली से टूटे आम की तरह मेरे चरणों में कैसे आ गिरा.

मेरे टपकने को नमक लगा कर धूप में डाल दे.. पहले यह बता कि तू जा कहाँ रहा था?

मोटू से मिलने जा रहा था.
तू मोटू से मिलने जा रहा है.. भाग जा यतीम डाक्टर.. इस समय वह तेरी खाल खींच लेगा.

मगर क्यों?

हां यार मरीजमार, उठते बैठते, खाते-
मरोड़ता रहता है.

तो फिर तू चिंता मत कर मैं आज ही मोटू और उसकी मूछों को ठीक करता हूं.

मगर क्यों ?
सुन जरा ध्यान और कान लगा के.
पूरी बात सुनने के पश्चात.
इसका मतलब उसे अपनी मूछों पर गर्व हो गया है.
हां यार मरीजमार, वह तो सोते जागते, उठते बैठते, खाते-पीते बस मूछें ही मरोड़ता रहता है.
उसका चढ़ा हुआ दिमाग दुरूस्त करना होगा.
बिलकुल.
तो फिर तू चिंता मत कर मैं आज ही मोटू और उसकी मूछों को ठीक करता हूं.
अच्छा ! वो कैसे?

मेरे घर चल वहीं बताऊंगा.
चल.

मगर कहते हैं न कि दिवारों के भी कान होते हैं.
ये दोनों कहां भागे जा रहे हैं. जरूर कोई चक्कर है.

अजी वाह! इस

यही मेरा ही मोटू
की मूछों की रेख
तैसी करेगा.

मैं भी इनके पीछे पीछे चलता हूं.

उधर
बता मैं कैसा लगता हूं.

तो यह बात है.
सब मोटू की
मूछें साफ क
का चक्कर है

kissekahani.com

अगर मेरे जैसे कलियुगी नारद मुनि के पेट में यह भेद पच नहीं पायेगा.. मैं भी पीछे-पीछे चलता हूं.
लोटू के घर पर-
बाओ ऽ.. व्हाट र मूछें..
?
अम रे मिस्टर डिंगडांग फ्राम हांगकांग.. अम हालीवुड के हीरो को मूंछें सप्लाई करता रे.. अम इंडिया में न्यू न्यू मूछें खरीडने आया रे.
अच्छा.. अच्छा.. आप 'मूंछ-मर्चेन्ट' हैं.
यस.. अम अच्छी मूछों का कद्र-डान रे.. तुमारी मूछें भी बाहुत अच्छा रे.. अम इनको खरीडना मांगता हाय.
मेरी मूछें आप खरीदेंगे.
अगर तुम अमको अपनी मूछें बेचेगा तो अम तुम्हें पांच हजार रूप्या डेगा.

पांच हजार
मैं अभी मूछें आपके हवाले करता हूं.
अपनी आखों का ई
मासपीटे.. येतो मिस
डांग है.. मूंछ मर्चे
होंने मेरी मूछें
में खरीदी हैं.

पांच हजार !!
अम डस हजार भी डे सकटा रे.
मजे आ गये मोटू राम.. इससे पहले इस अग्रेंज का विचार बदल जाये फटाफट मूछें काटकर इसे दे दूं
मैं अभी मूछें आपके हवाले करता हूं.
टो ये लो बैंक आफ हांगकांग का डस हजार का चैक..
लेकिन तभी-
ओये झटके, तू यहाँ क्या कर रहा है तेरे मरीज दवाखाने में इंतजार कर रहे हैं.
झटका..?
अपनी आखोंका ईलाज करवा नासपीटे..चेतो मिस्टर डिंग-डांग हैं..मूंछ मर्चेण्ट.. इन-होंने मेरी मूछें दस हजार में खरीदी हैं.
चैक नकली हैं झटके के भेष की तरह..यह तेरी मूछें कटवाने आया था..
क्या..
फूट गया भाण्डा.

सतीश चन्द्र, अ
मेरे माता पिता अधि
है, क्या करूँ ?

उनका अधिक
में अधिक भलाई
में बहुत उदास रह

लोटपोट
कॉमिक्स में भी
फिर आप को
लोटपोट हो ज
करूँ ?

कुक्कु बिट्टू, श्र
हवाईजहाज का अ

शायद सन् 190
यह आविष्कार कि

इंग्लैंड के
भाईयों ने ।

शिव शंकर, हिस
दिल्ली की विशेष

यहाँ सभी कु
भी विशेष नहीं
प्राणी है, हर
जगह का पहन
दिल्ली क्या है
है ।

जवाब हाज़िर है!

शेख़ चिल्ली...

सतीश चन्द्र, अलवर

मेरे माता पिता अधिक फिल्में देखने से रोकते हैं, क्या करूँ ?

उनका अधिक कहना मानिये । इसी में अधिक भलाई है ।

मैं बहुत उदास रहता हूँ । क्या करूं ?

लोटपोट के साथ साथ पिटारा कॉमिक्स में भी मेरे कारनामे देखिए, फिर आप कहेंगे, मैं हंसते हंसते लोटपोट हो जाता हूँ, बताईये क्या करूँ ?

कुक्कु बिट्टू, श्रीनगर

हवाईजहाज का आविष्कार कब हुआ ?

शायद सन् 1904 के आसपास ।

यह आविष्कार किसने किया ?

इंग्लैंड के राईट ब्रदर्ज नाम के दो भाईयों ने ।

शिव शंकर, हिसार

दिल्ली की विशेषता क्या है ?

यहाँ सभी कुछ विशेष है और कुछ भी विशेष नहीं है । यहाँ हर देश का प्राणी है, हर देश की भाषा है, हर जगह का पहनावा है, यूं कहो कि दिल्ली क्या है बारह मसाले की चाट है ।

प्रीतम सिंह, बरेली

शेखचिल्ली भाई, तुम्हारी जेब में जो खटकू रहता है, उसके खाने पीने का खर्चा क्या है उसके खाने पीने का तो कोई खास खर्चा नहीं है । मगर मैं जिस नूरी

जिन्न की जेब में रहता हूँ उसके खर्चे की बात पूछो, वह तुम्हारी पूरी बरेली के बांस खा जाए तब भी उसका पेट ना भरे ।

शेखचिल्ली
द्वारा 'लोटपोट साप्ताहिक'
ए-5, मायापुरी
नई दिल्ली - 110064

kissekahani.com

चक्कर पे चक्कर

सुनती हो, गर्ग साहब भाभी जी के साथ तीन चार दिन को घूमने जयपुर जा रहे है तुम कह रही थी न निशा के जन्म दिन पर उसके पास कुछ सामान भिजवाना है, उन्हीं के हाथ भिजवा दो वर्ना फिर कई महीने तक किसी का चक्कर लगने वाला नहीं, 'मुकुल के पिता दफ्तर से लौटकर घर में घुसते हुए बोले।

मुकुल ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था उसकी दीदी निशा की तीन साल पहले शादी हुई थी वो जयपुर में रहती थी उनकी छोटी सी प्यारी सी बेटी गुड़िया थी।

ये तो तुमने बहुत अच्छी खबर सुनाई मैं तो परेशान हो रही थी कि निशा के पास सामान कैसे भेजूँ, माँ चाय का प्याला देती हुई बोली।

अगले दिन शाम तक माँ बाजार से निशा के लिए साड़ी, गुड़िया के लिए खिलौना फ्रॉक आदि ले आई उन्होने लड्डू भी बनाए तथा निशा के नाम पत्र लिख कर भी तैयार कर लिया।

उसके अगले दिन मुकुल की छुट्टी थी मुकुल के पिता ने सारा सामान एक डिब्बे में बन्द करके डोरी से बाँधकर पैकेट तैयार कर दिया और दफ्तर जाते समय मुकुल से कहते गए, 'गर्ग साहब तो आज सफर की तैयारी में लगे होंगे इसलिए छुट्टी पर हैं तुम दिन भर में कभी भी जाकर उनके घर ये पैकेट जरूर दे आना।'

मुकुल ने जी अच्छा कहकर पैकेट ले लिया।

दोपहर को मुकुल ने माँ से पूछा, माँ गर्ग अंकल कितने बजे की गाड़ी से जाएंगे ?'

माँ ने उत्तर दिया, 'सात बजे वाली गाड़ी से कह रहे थे। बता रहे थे छः बजे घर से चल देंगे वो लोग।'

मुकुल ने हिसाब लगाया यदि मैं साइकिल पर गया तो 20-25 मिनट में उनके घर पहुँच सकता हूँ यदि साढे चार पाँच बजे भी निकला तो समय से पहले पैकेट पहुँचा दूँगा।

शाम को लगभग पौने पांच बजे मुकुल ने साइकिल के पीछे कैरियर पर पैकेट बाँधा और चल पड़ा गर्ग अंकल के घर की ओर। रास्ते में एक सपेरा सांप का खेल दिखा रहा था। मुकुल को बचपन से साँप देखने में बहुत मजा आता था उसके पास समय तो खूब था ही वह भी खेल देखने को रूक गया 10-15 मिनट तो सपेरा तरह तरह के साँप दिखाता रहा

फिर उसने एक
निकाल लिया तथ
साथ उसकी लड़ा
मुकुल उसे देखने
खो गया कि उसे
होश ही न रहा
खत्म हुआ तो पाँ
रहे थे।

मुकुल ने हिस
अभी भी वह पाँ
तक गर्ग अंकल
पहुँच सकता है
बजे जाना है व
आगे चल दिया।
चलने पर उसे उ
राकेश मिल गया
उसने खराब करव
मुश्किल से उससे
कर वह आगे बढ़

जब वह गर्ग
घर के पास पहुँच
घड़ी में पौने छः
अंकल के घर
लटका देखकर
जान ही निकल
अंकल पहले ही
अब क्या होगा
पास सामान कै
पाँच दिन बाद ही
जन्मदिन। अब
घड़ी को कोस र
वह सांप देखने क
अचानक उसे

फिर उसने एक नेवला निकाल लिया तथा सांप के साथ उसकी लड़ाई कराई। मुकुल उसे देखने में इतना खो गया कि उसे समय का होश ही न रहा जब खेल खत्म हुआ तो पाँच बीस हो रहे थे।

मुकुल ने हिसाब लगाया अभी भी वह पाँच चालीस तक गर्ग अंकल के घर पहुँच सकता है उन्हें तो 6 बजे जाना है वह तेजी से आगे चल दिया। कुछ ही दूर चलने पर उसे उसका दोस्त राकेश मिल गया पाँच मिनट उसने खराब करवा दिए बड़ी मुश्किल से उससे पीछा छुड़ा कर वह आगे बढ़ा।

जब वह गर्ग अंकल के घर के पास पहुँचा तो उसकी घड़ी में पौने छः बजे थे पर अंकल के घर पर ताला लटका देखकर उसकी तो जान ही निकल गई तो क्या अंकल पहले ही निकल गए अब क्या होगा ? दीदी के पास सामान कैसे पहुँचेगा पाँच दिन बाद ही तो है उनका जन्मदिन । अब वह उस घड़ी को कोस रहा था। जब वह सांप देखने को रूका था। अचानक उसे ख्याल आया

कि गाड़ी तो सात बजे छूटती है यदि वह स्टेशन चला जाए तो अभी भी सामान पहुँचा सकता है स्टेशन वहाँ से लगभग 3 मील दूर था उसने फिर से साइकिल दौड़ा दी।

लगभग सवा छः बजे वह स्टेशन पहुँच गया तथा तेजी से प्लेटफार्म टिकट लेकर अन्दर घुस गया। भाग भाग कर उसने सभी प्लेटफार्म देख डाले पर उसे गर्ग अंकल या आंटी में से कोई दिखाई न दिया परेशान होकर वह पूछताछ वाली खिड़की पर आ गया। वहाँ पता चला कि सात बजे तो जयपुर के लिए कोई गाड़ी जाती ही नही

एक बार फिर मुकुल का सिर चकरा गया । माँ ने बताया था सात बजे वाली गाड़ी से जाना है कही ऐसा तो नही उन्हें सात बजे वाली बस से जाना हो।

हाँ उनके शहर से जयपुर के लिए बसें भी तो चलती हैं। स्टेशन पर घूमते घूमते छः चालीस हो गए थे बस स्टैन्ड वहाँ से 2 ढाई किलोमीटर था उसने हिसाब लगाया तेजी से साइकिल चलाए तो पहुँच भी सकता है उसने बाहर आकर साइकिल बस स्टैंड की ओर बढा दी। तेज चलाने की हड़बड़ी में एक बार वह टकराते टकराते बचा उसने मन ही मन कसम खा ली कि भविष्य में कभी जरूरी काम बीच में रोक कर कोई खेल तमाशा नहीं देखेगा।

सात बजने में 2 मिनट पर वह बस स्टैंड जा पहुँचा।

वह उसी स्थान पर पहुँचा जहाँ से जयपुर के लिए बसे जाती थी पर आश्चर्य की बात ये थी कि वहाँ भी उसे गर्ग अंकल या उनके परिवार का कोई सदस्य दिखाई नही दिया।

उसने पास खड़े एक आदमी से पूछा यहाँ से कुछ देर पहले जयपुर के लिए कोई बस जा चुकी है क्या ?

कहाँ भैया, एक बस 15-20 मिनट बाद जाने वाली है वो खड़ी मैं भी उसी में जा रहा हूँ । मुकुल दौड़कर बस में चढ़ गया उसमें 20-25 सवारियाँ बैठी हुई थी पर गर्ग अंकल का कही नामोनिशान भी नही था। ये मैं आज किस चक्कर में पड़ गया ? चक्कर पे चक्कर लगाए जा रहा हूँ पर काम है कि बनता ही नही मुकुल बुदबुदाया।

मुकुल वहां तब तक खड़ा रहा जब तक कि बस चली नही गई पर तब तक गर्ग साहब न तो वहाँ पहुँचे और न ही उस बस में गए। एक बार तो मुकुल के मन में आया बसमें बैठे किसी आदमी को ही पैकेट पकड़ा दे पर फिर उसने ये सोचकर

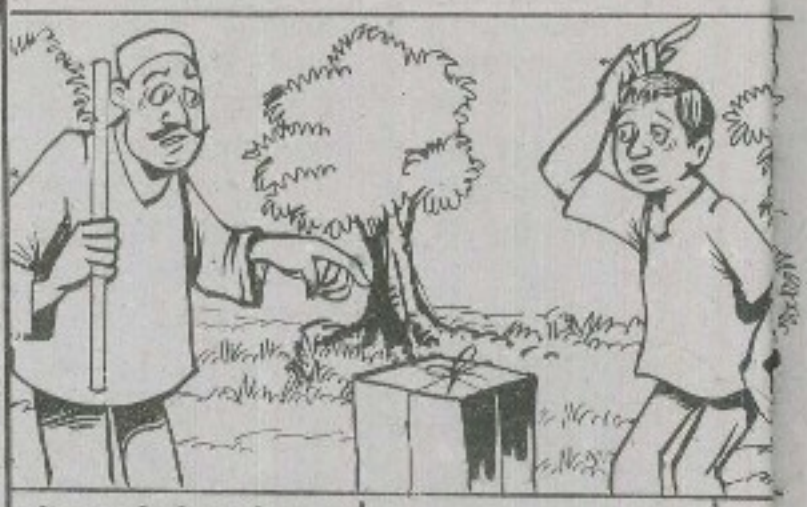

ऐसा नही किया कि उस आदमी ने पैकेट न पहुँचाया तो।

वो बस जाने के बाद मुकुल को पता चला कि अब रात को कोई और बस जयपुर नही जाएगी वह परेशान था गर्ग अंकल घर पर भी नही है रेल से भी नही गए बस से भी नही तो आखिर वो गए कहाँ ?

लगभग 7.30 बजे घर वापस लौटते समय वह बहुत परेशान था। लगातार साइकिल चलाने तथा पैकेट न पहुँचा पाने की असफलता के कारण वह शारीरिक तथा मानसिक दोनों तरह से थका हुआ लग रहा था। एक ओर तो उसे ये चिन्ता थी कि सामान दीदी के पास समय पर कैसे पहुँचेगा दूसरे ये कि पैकेट घर वापिस ले जाने पर पापा की डाँट खानी पड़ेगी क्यों न पैकेट को यहीं कही रख चलूं डाँट खाने से तो बच जाऊँगा।

फिर उसने सोचा पता तो पापा को बाद में भी चल जाएगा जब अंकल जयपुर से लौटकर आएंगे तब बता देंगे कि मैंने पैकेट समय पर नही पहुँचाया था। ये सब सोचते सोचते वह अपने घर से कुछ ही दूरी पर एक बगीचे के पास से गुजर रहा था तभी उसने अन्तिम निर्णय दे डाला बाद की बाद में देखी जाएगी अभी तो इस पैकेट को इस बगीचे में कही छिपा देता हूँ सुबह सवेरे ही अवसर देखकर ले जाऊंगा।

मुकुल ने पैकेट साइ
निकाला, चोरों की त
उधर देखा और जब
विश्वास हो गया कि
देख नही रहा तो उ
बगीचे में एक झाड़ी
दिया।
परन्तु उसका अनुम
था एक हवलदार
समय गश्त पर था
की तरह पैकेट
लाते देख चुका
उसके पीछे पीछे इ
आ गया था। जैसे
पैकेट छिपा क
हवलदार अपन
पटकाता बोला,
क्या छिपा कर जा
पैकेट में बम ?'

'नही हवलदार
बात ये हुई कि
स्टेशन पर भी नही
पर भी नही बस भी
और मैं चक्कर में
मुकुल हकलाया।

क्या अनाप शनाप
है अभी बम बे
वाले दस्ते को बु
तभी तुझे आटे दा
मालूम होगा सूरत
मासूम दिखता है
इतने खतरनाक।

मेरा विश्वास

मुकुल ने पैकेट साइकिल से निकाला, चोरो की तरह इधर उधर देखा और जब उसे पूरा विश्वास हो गया कि उसे कोई देख नहीं रहा तो उसने उसे बगीचे में एक झाड़ी में छिपा दिया।

परन्तु उसका अनुमान गलत था एक हवलदार जो उस समय गश्त पर था उसे चोरो की तरह पैकेट बगीचे में लाते देख चुका था और उसके पीछे पीछे झाड़ी तक आ गया था। जैसे ही मुकुल पैकेट छिपा कर उठा हवलदार अपना डंडा पटकाता बोला, 'ऐ छोकरे क्या छिपा कर जा रहा है इस पैकेट में बम ?'

'नहीं हवलदार साहब यो बात ये हुई कि अंकल स्टेशन पर भी नही मिले घर पर भी नही बस भी चली गई और मैं चक्कर में पड़ गया' मुकुल हकलाया।

क्या अनाप शनाप बक रहा है अभी बम बेकार करने वाले दस्ते को बुलवाता हूँ तभी तुझे आटे दाल का भाव मालूम होगा सूरत से कितना मासूम दिखता है और काम इतने खतरनाक।

मेरा विश्वास कीजिए हवलदार साहब इसमें खिलौने हैं। कपड़े हैं, लड्डू हैं बम नहीं मैं अपने हाथ से खोलकर दिखा देता हूँ।

लड्डू सुनकर हवलदार होठो पर जीभ फिराता बोला, 'अच्छा चल तू खुद खोलकर दिखा।'

मुकुल ने फटाफट पैकेट खोल दिया हवलदार को दूर से ही देसी घी के लड्डुओं की सुगंध आ रही थी। इसलिए वह आसानी से मुकुल की बात मान गया था। तुरंत दो तीन लड्डू उठाकर मुँह में भरता बोला, 'अबे तो इसे यहाँ क्यों छोड़े जा रहा था। उठा इसे यहाँ से और चलता फिरता नजर आ नही तो थाने पहुँचा दूंगा।

मुकुल ने हवलदार की आज्ञा का पालन करने में ही अपनी भलाई समझी उसने जल्दी जल्दी उल्टा सीधा पैकेट बाँधा और घर की ओर चल दिया।

घर के बाहर से ही उसे गर्ग अंकल व आंटी की आवाजे आ रही थी। वह हैरान था ये सब क्या चक्कर है कही वह साइकिल चलाते चलाते जयपुर तो नही पहुँच गया ? वह बाहर ही रूक कर अन्दर की बातें सुनने लगा।

माँ कह रही थी, 'पर वो तो करीब साढ़े चार का निकला हुआ है। अब तो सवा आठ बज रहे हैं। कहाँ होगा अबतक हम तो सोच रहे थे आपके साथ होगा।'

हमें सफर के लिए कुछ खरीदारी करनी थी इसलिए साढे पाँच बजे करीब घर से

निकल गए थे। तब तक तो वो हमारे पास नहीं पहुँचा था बाजार से लौटते समय हमने सोचा आप पैकेट भिजवाने को कह रहे थे तो खुद ही लेते चले। इसलिए यहाँ आ गए।

पर मुकुल इतनी देर से है कहाँ बिना बताए तो वह कही जाता नही मुझे तो अब चिन्ता हो रही है उसके दोस्तो के घर पता करता हूँ, ये आवाज मुकुल के पापा की थी। अब तक मुकुल संभल चुका था उसे ये भी समझ में आ गया था कि गर्ग अंकल अभी जयपुर के लिए रवाना नही हुए हैं अतः उसने कमरे में निर्भय होकर प्रवेश किया।

कहाँ थे तुम अब तक ? इतनी देर कहाँ लगा दी ? इतना घबराए हुए क्यों हो ? ये पैकेट खुल कैसे गया ? जैसे सवालों की बौछार उस पर होने लगी।

माँ पहले पानी पिलाओ, कहकर मुकुल धम्म से सोफे पर निढाल सा बैठ गया . पानी पीकर मुकुल ने घर से निकलने के बाद जो कुछ भी हुआ था विस्तार से कह सुनाया। सारी बात सुनकर पापा बोले, बेटे यदि ठीक से पूरी बात सुनते तो इतनी तकलीफ न उठानी पड़ती गर्ग साहब को आज शाम की नहीं कल सुबह सात बजे की रेलगाड़ी से जाना है।

-वन्दना गुप्ता

अचम्भे

अठाहरवी

नवद्वीप जिले
नामक एक वि
सचमुच वे सद
उनके पास अने
करते थे। उन
पढाया करते थे
मांगते थे न कि
उनकी इच्छा रहती

यह बात क
कानों में पहुँची
गरीबी में रह र
कुछ मांगते हैं
इच्छा ही रखते
एक दिन उन
नमस्कार करके
शास्त्री जी बच्चो

kissekahani.com

अचम्भे की बात

अठाहरवीं सदी में बंगाल के नवद्वीप जिले में रामनाथ शास्त्री नामक एक विद्धवान हो गये हैं। सचमुच वे सद्गुणों के भण्डार थे, उनके पास अनेक विद्यार्थी पढ़ने आया करते थे। उन बच्चों को वे प्रेम से पढ़ाया करते थे। न वे किसी से कुछ मांगते थे न किसी से कुछ पाने की ही उनकी इच्छा रहती थी।

यह बात कृष्ण नगर के राजा के कानों में पहुँची। रामनाथ शास्त्री बड़ी गरीबी में रह रहे हैं। न वे किसी से कुछ मांगते हैं और न कुछ पाने की इच्छा ही रखते हैं। यह सुनकर राजा एक दिन उनके घर पहुँचे और नमस्कार करके बैठ गये। उस समय शास्त्री जी बच्चों को पढ़ा रहे थे।

राजा ने कहा आपको किसी वस्तु की जरूरत हो तो कहिए उसे तत्काल पूरा कर दिया जाएगा।'

'मुझे तो किसी भी वस्तु की जरूरत नहीं हैं।'

'फिर आपका घर खर्च कैसे चलता है?'

'खाने के लिए अनाज चाहिए, वह विद्यार्थी ले आते हैं। पहनने के लिए दो कपड़े चाहिए, उन्हें हम खुद ही बुन लेते हैं।

राजा ने सोचा कि क्यों न, शास्त्री जी की पत्नी से भी पूछ लिया जाए? सो उन्होंने उनसे भी पूछ लिया। उसने भी कह दिया कि हमें किसी वस्तु की कोई जरूरत नहीं है।'.

यह सुनकर राजा को घोर अचम्भा हुआ और वे राजमहल में लौट आए। अब उन्हें इस बात का गर्व होने लगा कि उनके राज्य में कैसे कैसे सन्तोषी लोग रहते हैं।

–नारायण लाल परमार

केबल ओप्रेटरों के लिए

लोटपोट वीडियो का एक वर्ष के लिए लाईसेंस केवल 100/- में या 500/- रू. में एक वर्ष के लाईसेंस के साथ नए बनने वाले 7 लोटपोट वीडियो कैसेट या पहले बने हुए 1 से 20 तक के कोई भी 7 लोटपोट वीडियो कैसेट मुफ्त प्राप्त कीजिए।

सम्पर्क करें

लोटपोट वीडियोज

ए- 5, मायापुरी फेज - 1 नई दिल्ली - 110064

Phone : 5433120, 591439

TLX. 031 76125 MPLP IN FAX. 91 11 541 8596

मुफ्त

'लोटपोट'

कूपन को भर

10 लक्की ड्र

वीडियो कैसेट

भूलें : पाठकों

इस विषय पर

सदस्य इस प्रतियो

नाम -

पता -

पिनकोड

मुफ्त

लोटपोट पहेली – 20

मुफ्त

लोटपोट वीडियो की 10 कैसेट मुफ्त

'लोटपोट' पाठकों की रुचिनुसार हम एक पहेली शुरू कर रहे है । आज ही यह लक्की कूपन को भर कर साधारण डाक द्वारा हमें भेज दीजिए । आपके सब कूपनों को इकट्ठा करके 10 लक्की ड्रा निकाले जायेंगे । जिन पाठकों के नाम लक्की ड्रा में निकलेंगे । उनको लोटपोट वीडियो कैसेट डाक द्वारा भेजी जाएगी । साथ ही लोटपोट पर एक प्यारा सा स्लोगन लिखना न भूलें : पाठकों के उत्तर 24.9.93 तक आ जाने चाहिऐं

इस विषय पर किसी प्रकार का पत्र व्यवहार नही किया जायेगा लोटपोट कार्यालय का कोई सदस्य इस प्रतियोगिता में भाग नही ले सकता सम्पादक का निर्णय अंतिम एवम सर्वमान्य होगा

प्रश्न –

1. भारत का प्रथम और अंतिम भारतीय गर्वनर जनरल कौन था

2. विश्व का सबसे गरीब देश कौन सा है

3. भारत का प्रथम ब्रिटिश गर्वनर जनरल कौन था ?

फोटो के स्थान पर कूपन अवश्य चिपकायें

नाम – ----------

पता – ----------

पिनकोड ----------

लोटपोट पहेली - 20
लोटपोट साप्ताहिक
ए-5, मायापुरी
नई दिल्ली -110064

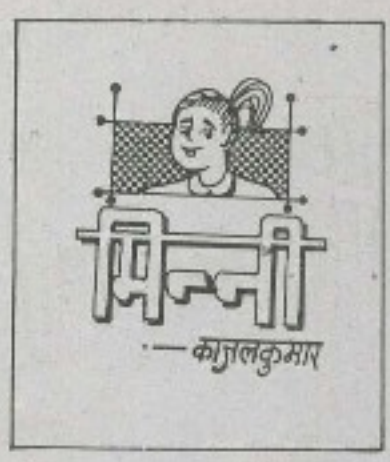
मिन्नी
—काजलकुमार

लेव छुटकू मैंने ये लैटर बम्ब बनाया है

इसे खोलने या फेंकने वाले का काम तमाम हो जाएगा

आओ इसे रोबोट को दे आएँ, कम्बख्त ने हमें बार बार पुलिस को पकड़वाकर नाक में दम कर दिया है

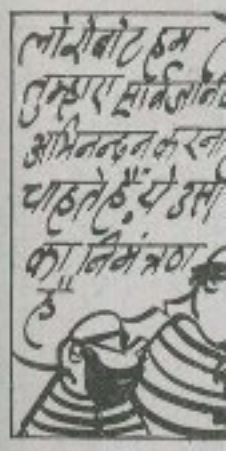
लो रोबोट हम तुम्हारा सालगिरह अभिनन्दन करना चाहते हैं, ये उसी का निमंत्रण है

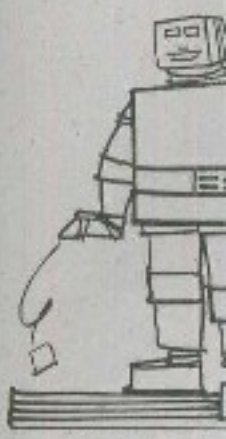

माफ करना रोबोट को तुम्हारा निमंत्रण स्वीकार नहीं

लोटपोट हम तुम्हारा सार्वजनिक अभिनन्दन करना चाहते हैं, ये उसी का निमंत्रण है
भड़ाम
माफ़ करना रोबोट को तुम्हारा निमंत्रण स्वीकार नहीं

kissekahani.com

एक दिन की बात है। चंपकवन के महाराज शेरसिंह अपने मंत्री बीरू भालू के साथ वन में घूम रहे थे। शेरसिंह यह देखना चाहते थे कि सभी प्रजा सुखी है या नहीं।

घूमते घूमते दोनों थक गए तो एक पेड़ की छांव में आराम करने के लिए बैठ गए।

भले बुरे की पहचान

सामने से एक परदेशी भेड़िया आ रहा था। नजदीक आकर उसने शेरसिंह से कहा 'मैं चंपकवन में रहना चाहता हूँ। क्या मुझे यहां रहने की अनुमति देंगे।'

शेरसिंह ने पूछा, 'तुम कहां के रहने वाले हो? अब तक कहाँ रहते थे?'

यह सुनकर वह तनिक क्रोध से बोला, 'अब तक मैं सुंदरवन में रहता था। अब मैं सुंदरवन हमेशा के लिए छोड़ चुका हूँ।'

'परन्तु तुमने सुंदरवन हमेशा के लिए क्यों छोड़ दिया?' शेरसिंह ने जानना चाहा।

'सुन्दरवन छोड़ता नहीं तो क्या करता।' भेड़िये के स्वर में अभी भी क्रोध था।' वह भी कोई रहने की जगह है। वहां सब बुरे और स्वार्थी जानवर रहते हैं। इसलिए मैं सुंदरवन छोड़कर यहां रहना चाहता हूँ।'

शेरसिंह ने कुछ सोचते हुए कहा, 'देखो भाई तुम चंपकवन में भी नहीं रह पाओगे। क्योंकि यहां के जानवर भी बहुत बुरे हैं। तुम दूसरे वन में जाओ।'

भेड़िया निराश होकर आगे दूसरे वन की तलाश में बढ़ गया। कुछ देर के बाद वहां एक खरगोश अपने बाल बच्चों के साथ आया। उसने भी शेरसिंह से पूछा, 'यह कौनसा वन है?'

उत्तर मिला, 'चंपकवन' 'क्या बात है?'

खरगोश बोला, 'जी, मैं बहुत दूर से नंदनवन से चला आ रहा हूँ। मैं किसी दूसरे वन में बसने के लिए सोच रहा हूँ। क्या इस वन में मुझे रहने की इजाजत मिलेगी।

'तुम पहले यह बताओ कि तुम नंदनवन छोड़कर चंपकवन में क्यों रहना चाहते हो? क्या वहां के वासी अच्छे नहीं थे। 'शेरसिंह ने पुनः पूछा।

'नहीं नहीं ऐसी बात नहीं है। नंदनवन के वासी तो बहुत ही अच्छे, प्यारे और मिलन

शेरसिंह उसकी बात सुनकर प्रसन्न हो गए। 'तुम बड़े शौक से यहां रह सकते हो। तुम्हें किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी। तुम यहां रहकर कोई काम शुरू कर दो। सहयोग भी मिलेगा।' खरगोश शेरसिंह को धन्यवाद देता हुआ वन में चला गया।

मंत्री बीरू भालू से रहा नही गया। उसके समझ में यह बात नहीं आई कि शेरसिंह ने ऐसा क्यों किया। उसने साहस करके पूछ ही लिया, 'महाराज, जब भेड़िया ने आपसे यहां रहने की अनुमति मांगी तो आपने उसे मना कर दिया।

लेकिन जब खरगोश ने अनुमति मांगी तो आप खुशी खुशी तैयार हो गए। उसे इजाजत दे दी। यह भेदभाव क्यों ?"देखो' शेरसिंह ने समझाया' भेड़िया स्वयं बुरे स्वभाव का था। इसलिए वह दूसरों को भी बुरा बताता था। वह यहां रहता तो सबसे झगड़ता रहता वन में अशांति फैल जाती। इसीलिए मैंने उसे यहां रहने की आज्ञा नही दी। 'जबकि खरगोश बड़े भले स्वभाव का है। वह दूसरों को भी भला बताता है'

सार थे। मैं कोई दूसरे कारण से नंदनवन छोड़कर आया हूं खरगोश ने बताया।'

'दरअसल वहां कमाने का अवसर कम है। मैं अपने परिवार के लिए और कमाना चाहता हूं। सोचा कि नए स्थान पर अच्छा अवसर मिलेगा। इसलिए मैं यहां आ गया।'

इसका मतलब है कि उसके रहने से यहां प्रेमभाव ही बढेगा। उसके धंधा करने से यहां के जानवरों को रोजगार भी मिलेगा। अब तुम ही बताओ। मैंने अच्छा किया या बुरा ?"नही महाराज आपने निश्चय ही बहुत अच्छा किया' बीरू भालू बोला। उसकी आंखों में प्रशंसा के भाव थे।

-हेमंत यादव 'शशि'

बंटू बंदर को बीमार पड़े आज डेढ़ हफ्ते हो गये थे, पर इस बीच उसका एक भी दोस्त उसकी खोज खबर लेने नहीं गया था।

उसकी बीवी बच्चों को लेकर मायके गई हुई थी, **उसमें इतनी शक्ति नहीं थी** कि खुद चलकर वैद्य मोटू भालू के पास जा सके अपना इलाज कराने।

वक्त की दोस्ती

बंटू को इस बात का बहुत दुःख था कि उसके इतने दोस्त होते हुए भी, सहानुभूति जताने तो क्या कोई उसकी खोज खबर भी लेने नहीं आया था।

वह आंखे बंद किये सोच रहा था। मैं अपने दोस्तो पर जी खोलकर खर्च करता था उनके कठिन समय में उनकी मदद करता था। अपने घर बुलाकर रोज उन्हें दावत खिलाता था, तब वे मेरी कितनी तारीफ करते थे, जब भला चंगा था तो सभी आकर मेरा कुशल क्षेम पूछते थे, और आज जब बिस्तर पर पड़ा हूँ तो कोई पूछने तक भी नहीं आया।

अभी वह इसी उधेड़ बुन में लगा था कि उसे किसी की पदचाप सुनाई दी और उसकी आंखें अपने आप खुल गई। उसके सामने, चेहरे पर सहानुभूति का भाव लिए छोटू खरगोश खड़ा था। उसके हाथ में फलों से भरा एक झोला था।

छोटू को अपने घर आया देख बंटू को आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

जिस छोटू का खुल्ले आम मजाक उड़ाया करता था जिसकी प्रतिभा से जलता था और कई बार उसको

पूंछ दबाकर भाग

हाथी दादा पैड पहनकर
आये लेकर बल्ला।
हेल्मेट जब पहना तब ही,
मचा जोर का हल्ला।
स्पिन वॉलर बबर शेर की,
करने लगे धुनाई।
चीते की रफ्तार देखकर,
अपनी सूँड हिलाई।

लगता था भालू दादा भी,
हैं, पिटने में पक्के।
उनकी तो हर एक गेंद पर,
पड़ते चौके छक्के।
हाथीदादा क्रीज छोड़कर,
जैसे आये आगे।
एक गेंद पर बोल्ड हुये तब,
पूंछ दबाकर भागे।

-देवशर्मा विचित्र

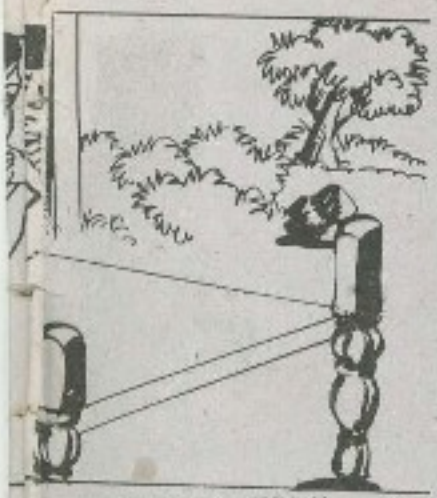

मेज पर रखता हुआ बोला, 'इसमें सेब व संतरे हैं, खा लेना, 'फिर उसने जेब से कुछ दवाईयां निकाली और उसे थमाकर बोला, 'सबसे पहले मैं वैद्य मोटू भालू के पास गया और यह दवाईयां ले ली। उन्होंने बताया है कि दो तीन खुराक में ही तुम्हारा बुखार छूट जाएगा।

बंटू अभी तक अवाक सा

'इसका मुझे कोई दुःख नही है कि तुमने मुझे पीड़ा दी थी। दुःख इस बात का होता था कि तुम चापलूसों और स्वार्थियों के बीच फंसे अपने पूर्वजों की गाढ़ी कमाई को उनपर दोनों हाथों से खर्च करते थे, 'और वह बंटू की शीघ्र स्वस्थ होने की कामना कर वापस लौट आया था।

सचमुच शाम होते होते

नुकसान भी पहुँचाया था। वही छोटू उसके सामने खड़ा था।

'बंटू भैया, मुझे आज ही पता चला कि तुम बीमार हो, बिल्ली लोमड़ी ने जब बताया तो मुझे बहुत दुख हुआ और मैं चला आया, 'उसने खेद प्रकट किया और फलों का झोला उसके पास

हुआ छोटू को देख रहा था, उसकी आंखें डबडबा आई थी। उसने भरये स्वर में कहा, 'मुझे माफ कर देना, छोटू मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिये हैं, मैं नही जानता था कि तुम इतने महान हो, आज मेरी आंखें खुल गयी कि वक्त का साथी कौन होता है

'बंटू भईया 'छोटू बोला,

उसका बुखार उतर गया था, उसने छोटू के लाये फल खाये तो काफी ताकत सी भी आ गई। दूसरे ही दिन पूर्ण स्वस्थ होकर घर से निकला

उसे देखते ही उसके कई चापलूस मित्र आ गए। लेकिन उसने अपने दरवाजे से भगा दिया।

-आनन्द पाल सिंह

kissekahani.com